आप विश्वविद्यालयों में प्रतिष्ठित नागरिकों, प्रोफैसरों और विद्यार्थियों को लेकर समिति बनायेंगे जोकि पहले से ही विचार कर सकें और इस तरह का वातावरण पैदा न होने पाये ?

डा० प्रताप चन्द्र चन्द्र : हमारे मंत्रालय की ओर से पहले ही हर विश्वविद्यालय को सुझाव गया है कि विश्वविद्यालय के स्तर पर एक ऐसी कमेटी बन जाये जिसमे छात्रों के प्रतिनिधि हो और शिक्षको के प्रतिनिधि हो—बाहर के लोगो को लेने का सवाल नहीं है। जिस तरह का झगडा चल रहा है उसके लिए हमारी ओर से यह सुझाव गया है।

श्री नाथू सिंह : सभापति महोदय, यू० जी० सी० मे प्रो० नुरुल हसन के पक्के साथी प्रो० सतीश चन्द्र बैठे हुए है, वे, जितना अनुदान दिया जाता है उसमे गडबडी करवाते है। तो जो आपके दफ्तर मे इस तरह के लोग बैठे हुए हैं जो उनसे मिलकर इस तरह का काम करते है क्या उन के खिलाफ भी आप कोई कार्यवाही करेंगे ? और आप न्यायालय मे जाने से क्यों डरते है ? इससे आप डरेंगे तो आप सरकार चला नही सकते है। आप उनको न्यायालय म जाने दीजिए। ऐसे कई उदाहरण है जिनमे उन्होने गडबडी की है।

श्री चन्द्र शेखर सिंह : सभापति जी मैं मंत्री जी से केवल यह जानना चाहता हू क्या वे युवा सगठन के प्रतिनिधियो को भी शामिल कर लेंगे ?

डा० प्रताप चन्द्र चन्द्र : विश्वविद्यालय मे जो छात्र सगठन है उनको तो साथ लेना है क्योकि विद्यार्थी और शिक्षको के बीच मे एक सम्पर्क बनना चाहिए।

---

15 hrs.

PERSONAL EXPLATION BY MEMBER

श्री भनी राम बागड़ी (मथुरा) सदन के सदस्य श्री राम किशन जी जो मेरे वरिष्ठ मित्र हैं और जिन्होंने भारत मे अछूतों और गरीबों का साथ दिया है और इस देश में डा० लोहिया की परम्पराओं को निभाया है और मेरे साथी रहे हैं।

मुझको मालूम नही क्या कारण था कि उन्होने 2 मार्च, 1978 को अपने भाषण मे भावुकता मे आकर या यों कहिये कि वे भरतपुर की जनता की पीडा को बरदाश्त न कर सके हो मेरे लिए कहा कि मुझे यह ख्याल रखना चाहिए कि मैं ससद् सदस्य हू किसी ग्राम पंचायत का सरपंच नही हू। माननीय सदस्य जानते हैं कि डा० लोहिया मे बड़ा आदमी ससदीय प्रणाली मे उन्होने और मैंने किसी को माना नही। मुझे फक्र है कि मैं लोक सभा मे डा० लोहिया और मधु एव राम सेवक यादव जी जैसे वरिष्ठ नेताओ का नेता रहा हू।

श्री राम किशन जी ने यह भी आरोप लगाया कि मैंने अफसरो की मीटिंग करके हुकम दिया कि पानी भरतपुर से मथुरा मे नही आना चाहिए और इसको रोका जाये।

अध्यक्ष जी मेरी निगाह मे मानव प्राणी मे सिर्फ भारत बल्कि ससार मे कोई भी है, कोई अतर नही है। सिर्फ फर्क इतना है कि किसी की मौत या किसी का दुख दूसरे पर जबरदस्ती क्या लादा जाये।

अमल मे माननीय रामकिशन जी भूल गए कि जब तक गोवर्धन नही उठेगा तब तक इन्द्र का कोप जो पृथ्वी को पीडित करता है उससे राष्ट्र नही बच सकेगा। यह मैं नही कहा रहा हू आज से 5,000 वर्ष पहले भगवान कृष्ण ने गोवर्धन उठा कर वज को बाढ से बचाया था।

मेरे माननीय मित्र श्री रामकिशन जी ने इतनी ममता जो क्षेत्र से दिखाई, जो सकीर्णता के शब्द मेरे लिए इस्तेमाल किए, अगर अपने

[श्री मनी राम बागड़ी]

लिए करते तो ज्यादा अच्छा होता । असल मे दोष क्या है कि बाढ जब आती है तब सब चिल्लाते हैं और जब बाढ चली जाती है तो सो जाते है ।

मैंने हाथी कमीशन की मीटिंग मथुरा मे बुलाई और श्री रामकिशन जी ने जो सहयोग दिया उसी का परिणाम है कि आज भरतपुर 750 करोड और मथुरा 1050 करोड रुपए बाढ के लिये लगना मजूर हुआ है। मेरे दोस्त मेरे पर आक्षेप करने के बजाय अपने क्षेत्र मे जाकर सरकारी नौकरशाही के कान खोलें और इस काम को जो बाढ रोकने का है उसे तेजी से चलवायें ताकि भरतपुर म बाढ आने न पाये और न मथुरा मे ।

मैं चाहता हू कि मेरे उस साथी का जिसने कभी जुल्म के खिलाफ आवाज सुनना भी पसन्द न किया था यह बात दूसरी है कि वे मुझे भूल गए है यह स्पष्ट हो जाये कि मैंने जो कुछ भी किया है इस भावना से नहीं किया है कि किसी अन्य क्षेत्र का नुक्सान पहुच बल्कि मैंने अपने कर्त्तव्य का पालन करने के लिए ठीक किया है ।

अच्छा हुआ माननीय श्री रामकिशन जी ने मुझको छेडा जिससे कि मथुरा भरतपुर और हरियाणा की जनता इस मत का समर्थन कि गोवर्धन उठाओ और भारत को बचाओ ।

सभापति महोदय प्रासीडिंग्ज म उतनी ही बात लिखी जायगी जितना इन के बयान म लिखा हुआ है ।

---

15 05 hrs

[MR DEPUTY-SPEAKER *in the Chair*]

METTERS UNDER RULE 377

(1) NEED FOR INSTALLATION OF STATUES OF DR RAM MANOHAR LOHIA AND DR SHAYMA PRASAD MUKHERJEE NEAR PARLIAMENT HOUSE

श्री राम विलास पासवान (हाजीपुर), उपाध्यक्ष महोदय, मैं आज जिस सवाल को उठा रहा हू वह एक ऐसे महापुरुष का सवाल है जिस ने न सिर्फ आजादी की लडाई मे बल्कि जिस ने जीवन भर आजादी के बाद भी हमेशा जुल्मो के खिलाफ सघर्ष किया है । तिब्बत पर जब हमला हुआ, तो सब से पहले उस महापुरुष ने आवाज उठाई । खान अब्दुल गफ्फार खान का मामला आया, तब उस ने आवाज उठाई और नेपाल की जेल मे से वे भागे । लार्ड इर्विन और जार्ज पचम के स्टेचू, जो इन्डिया गेट के सामने थे और विदेशी जब हमारे शासक थे उस वक्त लगाए गए थे, को उखाड फैंकने का काम इसी महापुरुष की देन है । उस मे हमारे माननीय बागडी भी थे और दूसरे बहुत से नेता थे । तो उस महापुरुष डा० लोहिया और उस के बाद डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी की यादगारे स्थापित करने के सम्बन्ध म मैं ने 377 के तहत इस मामले को उठाने के लिये लिखा था जिस को मैं पढ कर सुनाना चाहता हू ।

'मैं आप का अत्यत ही आभारी हू कि आप ने अत्यन्त लोक महत्व के विषय की ओर सरकार का ध्यान आकृष्ट करने का मौका दिया है । डा० राम मनोहर लोहिया उन नेताओ म से एक थे जिन का जीवन शोषित जनता के लिए समर्पित था । जिन्होने कहा था कि लोग मेरी बात सुनेंगे जरूर सुनेंगे लेकिन शायद मेरे मरने के बाद ? डा० राम मनोहर लोहिया ने सिर्फ विदेशी हुकूमत से जूझते रहे बल्कि आजादी के बाद भी देश की शोषित पीडित जनता के लिए उन्हें काफी यातनाये सहनी पडी और जेल की चारदीवारी के अन्दर बद रहना पडा । आज हम लोग जो सरकारी पक्ष म बैठे हुए है वह उन्ही की देन हैं । डा० लोहिया को कई बार विदेशी प्रतिमाये हटाने के जुर्म म भी जेल जाना पडा । आज हम अफसोस है कि हमने न सिर्फ डा० लोहिया को भुलाया है बल्कि उन की नीतियो को भी भूलते जा रहे हैं । आज कहीं भी उस